

ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

विस्वाँ सीतापुर



* सद्गुरु - महिमा *

- महापुरुषों की वाणी -

तीन लोक नौ खण्ड में, गुरु से बड़ा न कोय !

कर्ता करे न करि सके, गुरु करे सो होय !!

गुरु, गोविंद दोउ खड़े, काके लांगू पाँय !

बलिहारी है गुरु की, गोविंद दियो मिलाय !!

गुरु है बड़े गोविंद से, मन मा करहु विचार !

हरि सुमिरे ते वार है, गुरु सुमिरे ते पार !!

धरती सब कागज करूँ, लेखन सब बनराय !

सात समुद्र की मसि करूँ, गुरुगुन लिखा न जाय !!

हरि से तू मत हेत कर, कर सद्गुरु से हेत !

माल मुलुक हरि देत है, सद्गुरु हरि ही देत !!

गुरु हमारे सब बड़े, अपनी - अपनी ठौर !

शब्द, विवेकी, पारखी, सो सबका सिरमौर !!

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिए अंध !

दुखी होय संसार में, आगे जम का फंद !!

गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहिं !

कह कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहिं !!

सद्गुरु मेरा सूरमा, दृष्टि का मारा बाण !

सत्यनाम ही रह गया, पाया पद निर्वाण !!

सद्गुरु - वाणी

हरि को खोजन क्यों पड़ा, सद्गुरु खोजो जाय !

हरि खोजे से न मिले, सद्गुरु खोजे मिलि जाय !!

सद्गुरु खोजे हरि मिले, हरि खोजे हरि दूर !

जीव मिलावे राम से, सब धन हो भरपूर !!

पहले सद्गुरु खोजकर, शरणागत है जाव !

ज्ञान, ध्यान सब छोड़कर, सबहि मिटावो भाव !!

तुमको कुछ करना नहीं, यह सद्गुरु का काम !

पूर्ण समर्पित होव तुम, तुम्हें मिलेगा राम !!

जब तक तुम कुछ कर रहे, शरणागत है नाहिं !

तुम्हें तो है सब छोड़ना, करना है कुछ नाहिं !!

ध्यान भजन कुछ भी नहीं, नहीं खोजना ग्रंथ !

पूर्ण समर्पण चाहिए, सभी छोड़ना पंथ !!

पात्र है बनना जीव को, सदगुरु खुद मिलि जाय !

खोजे से वह ना मिले, और दूर हवै जाय !!

अहंकार जब शून्य हो, मन सन्मुख हवै जाय !

यही भेद तो गुप्त है, भेद गुरु से पाय !!

मन में चतुराई भरी, चंचल मन की ब्रति !

अपना लाभ ही सोचता, यह तो नहिं गुरुभक्ति !!

सद्गुरु पारस जानिये, लोहा, सोना होय !

एक सूत अंतर रखे, सोना कैसे होय !!

सद्गुरु को पहचानना, यह दुर्लभ है काम !

धार सतगुरु प्रकट हो, उसे ही सद्गुरु मान !!

गुरु तो तुम बहुतै किये, सत्य को पाया नाय !

यदि तुम सद्गुरु खोज लो, सत्य तुरत मिलि जाय !!

गुरु, सद्गुरु में भेद है, मन मा करो विचार !

गुरु माया में खींचते, सद्गुरु करते पार !!

गुरु सतगुरु में भेद यह, जो नाम और सतनाम !

नाम द्वैत है गुरु का, अद्वैत है सतनाम !!

नाम रूप है गुरु का, सद्गुरु का सतनाम !

जीव निकाले द्वैत से, तुरत मिलावे राम !!

ध्यान योग सब गुरु का, सद्गुरु का कुछ नाहिं !

सहज दृष्टि हो जीव की, करना है कुछ नाहिं !!

ध्यान, भजन, जप, तप करे, क्रिया कर्म सब होय !

यह तो गुरु का पंथ है, यह मन का मत होय !!

करना तो कुछ भी नहीं, दृष्टि बदलना होय !

यह तो सद्गुरु पंथ है, यह आत्म मत होय !!

पूर्ण समर्पित जीव हो, मन सद्गुरु को देय !

भेदभाव कुछ भी नहीं, सद्गुरु शरण में होय !!

राम, आत्मा एक है, यही परमपद होय !

यही पूर्णपद, सत्यपद, मोक्ष मुक्ति पद होय !!

केवल यहाँ ही पहुँचना, जीव का एक ही लक्ष्य !

सन्मुख होना दृष्टि से, आत्म हो प्रत्यक्ष !!

जो तुम अभी हो कर रहे, यह मन का मत होय !

मन तक इसकी पहुँच है, आगे पहुँच न होय !!

आत्म मत है सत्यमत , यह सद्गुरु मत होय !

मन हो सन्मुख आत्म के, जीव मुक्त तब होय !!

जीव, जगत, परमात्मा, मुख्य तीन को जान !

दर्पण मन यह जगत है, इसे पलटना जान !!

जीव, जगत, परमात्मा, जानों तीन का जान !

मन की दृष्टि को पलटना, यह सद्गुरु से जान !!

जीव, जगत, परमात्मा, जानों केवल तीन !

मन की दृष्टि को पलट दो, परमात्म में लीन !!

सात रंग मन में छिपे, जो सोंचे वह रूप !

निराकार, आकार भी, करना इसे अरूप !!

रूप, रंग, आकार सब, इसे बदलना होय !

गति को करना अचल है, सन्मुख हरि के होय !!

सात स्वर्ग अपवर्ग सब, मन के क्षेत्र में होय !

माया से यह मन बना, मन दर्पण यह होय !!

सत्य नहीं मन क्षेत्र में, जो सोंचो वह रूप !

जिसके सन्मुख होय मन, वही है दिखते रूप !!

इसीलिए है पलटना, मन सन्मुख हो सत्य !

रंग सभी मिल एक हों, मन में धार हो सत्य !!

ज्ञानी न ध्यानी, न योगी बनो तुम !

सन्मुख रखो मन, शरण में रहो तुम !!

प्रभू को ही मानों, समर्पण करो तुम !

सदा सद्गुरु को, समर्पित रहो तुम !!

रावण भी जानी था, शिव का पुजारी !

शिव ही गुरु थे, सभी शक्ति सारी !!

ध्यानी भी, योगी भी, बल बुद्धि सारी !

लंका भी सोने की, मद की खुमारी !!

हुआ क्या सभी तुम, इसे ही विचारो !

आओ शरण प्रभु की, सद्गुरु को धारो !!

दो ही हैं मत, ब्रह्म, आत्म के जानो !

सुमिरन, भजन, ध्यान, मत ब्रह्म मानो !!

हो केवल समर्पण, मत आत्म का जानो !

भजन, ध्यान छोड़ो, समर्पण को मानो !!

समर्पण ही है मुख्य, इसको ही जानो !

शरण हो प्रभु की, भेद आत्म का जानो !!

माला फेरत जुग गया, मन का हुआ न फेर !

अब तो माला छोड़ दो, मन को अपने फेर !!

मन की दृष्टि को फेरकर, मन सन्मुख हो आत्म !

इस छोटी सी बात को, कहते हैं अध्यात्म !!

मन काला कागा बना, सब रंग मिलि हो हँस !

मन को अपने फेर दो, तुरत बने यह हँस !!

माया के सन्मुख रहे, विमुख यह हरि से होय !

सन्मुख मन हरि के करो, तब यह हरि ही होय !!

ध्यान, भजन में फिरता नाहीं, क्रिया, कर्म क्यों लागा !

मन है द्वैत फँसा माया में, माया ही में लागा !!

तीरथ, व्रत और कथा भागवत, मन नहिं फिरे अभागा !

योग, ज्ञान, बैराग्य फँसा मन, हँस न बनता कागा !!

माया के सन्मुख यह मन है, कैसे होय बिरागा !

कोटि जतन से मन नहिं फिरता, खोजो सद्गुरु जागा !!

लाभ है क्या यह जान लो, यदि मन हो सन्मुख आत्म !

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, मुक्ति, विवेक और राम !!

बुद्धि, सुमति, चित्त स्थिर, अहंकार हो शून्य !

मन स्थिर और हंस हो, मानस रोग हो शून्य !!

नर से नारायण बनो, जीव है बनता पीव !

प्राण तत्व, अतत्व हो, विराट पुरुष बने जीव !!

प्रकृति, जगत , दर्पण यही, मन भी दर्पण होय !

जिसके सन्मुख होय मन, रूप है दिखता सोय !!

ध्यान, भजन, जप, तप नहीं, मन सन्मुख हो राम !

पूर्ण समर्पित जीव हो, जीव के पूरे काम !!

जीव को करना कुछ नहीं, मन सन्मुख हो राम !

पूर्ण समर्पण चाहिए, तुरत मिलेंगे राम !!

बाज, कबूतर, बहेलिया, गज और ग्राह का द्वंद !

पूर्ण समर्पित द्रौपदी, सब के कट गये फंद !!

जीव जो चाहें परमपद, या चाहें निर्वाण !

जीव को करना कुछ नहीं, मन सन्मुख हो आत्म !!

सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903